स्पर्श

जयवन्त दलवी

चित्रांकन
सुजाता सिंह

जयवन्त दलवी

श्री जयवन्त दलवी मराठी भाषा के वरिष्ठ लेखक थे। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में नाटक, उपन्यास एवं कथा संग्रह हैं। इनकी अनेक कृतियों का अनुवाद हिन्दी तथा अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में हुआ है और चर्चा का विषय रहा है।

व्यक्ति के अंतर्मन को लेखनी के द्वारा कागज पर उतारने की भावना ही इनकी लगभग समस्त रचनाओं का केन्द्र बिंदु रही है। स्त्री-पुरुष के संबंधों के इर्द गिर्द इनकी कई रचनाओं का जन्म हुआ है। इनके कई नाटक अभूतपूर्व रूप से प्रसिद्धि पा चुके हैं जिनमें 'महासागर', 'संध्याछाया' एवं 'पुरुष', उल्लेखनीय हैं। इनके कथा संग्रहों में प्रमुख हैं, 'स्पर्श' 'रूक्मिणी' एवं 'स्वप्नरेखा'। इनके लगभग चौदह उपन्यास हैं, जिनमें 'धर्मानंद', 'महानंदा', 'स्वागत' एवं 'चक्र' बहुत प्रसिद्ध हुये। 'महानंदा' पर मराठी में एवं 'चक्र' पर हिन्दी में फिल्म निर्माण हो चुका है। 'चक्र' में इन्होंने झुग्गी झोंपड़ियों में जीवन व्यतीत करने वालों का अत्यन्त मार्मिक एवं जीवंत वर्णन किया है अन्यथा इनकी लगभग सभी रचनायें मध्यवर्गीय जीवन शैली पर ही आधारित हैं।

वे नाटक, व्यंग एवं कहानी, सभी विधाओं में पारंगत थे। उनकी रचनाओं में समकालीन जीवन की कठिनाईयां, संघर्ष एवं मानव हृदय पर इस जीवन शैली के प्रभाव की स्पष्ट छाप झलकती है। इस कहानी 'स्पर्श' में भी नानी के मन की भावनाओं का सजीव चित्रण है।

सायँकाल की सुनहरी किरणें, अब तक ज़मीन पर उतरी नहीं थीं। इस बड़े पीपल की, शाखों के बीच से, छन कर आती लग रही थीं। हवा के स्पर्श से पूरा वृक्ष, गुदगुदा कर मानों हँस रहा था। तने के, एक खोखल में से एक तोता चोंच निकाले, झाँक रहा था। एक शाख पर, लम्बा सा घोंसला, लटक रहा था। किस पक्षी का था,कौन जाने ?

वृक्ष के नीचे, आसमान की ओर ताकते, रामाराव खड़े थे। उनकी आँखों के आँसू, आँखों तक ही सिमट रहे थे, इसका किसी को पता न था।

आज आँखें, न जाने क्यों भर आ रही हैं। चार वर्ष पूर्व जब नानी आश्रम गई थीं, तब भी आँखें, इतनी तो नम नहीं थीं। आज तो वह ठीक होकर, वापिस आ रही हैं, आज तो मन में, आनन्द होना चाहिये। पर आनन्द हो रहा है क्या ?

पीपल के नीचे, एक पूरी मंडली, नानी की बाट जोह रही थी। नानी का बेटा, वीनू। उसकी पत्नी अनुराधा। उनका आठ वर्ष का बेटा रंगा, आस-पड़ोस की औरतें और बच्चे सभी जमे हुए थे।

"रंगा, दादी के बुलाने पर भी, पास नहीं जाना समझे !" अनुराधा, रंगा को बार-बार समझा रही थी।

रामाराव को यह अच्छा नहीं लगा। डाक्टरों ने तो कह ही दिया है कि वो, अब पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी हैं।

"भैयाराम और उन्हें, अब तक आ जाना चाहिये था।"

"रूको, बस की आवाज़ आ रही है।" पड़ोस की काकू सबको चुप कराती हुई, कान लगाकर सुनने लगी।

पर, रामाराव को ऐसा नहीं लगा। पिछले एक घंटे में उन्हें गाड़ी की आवाज़, कई बार सुनाई पड़ी थी।

"आ गई रे, आ गई !" काकू फिर चिल्लाई । सचमुच इस बार आवाज़ आई थी । चबूतरे पर बैठी मंडली, खड़ी हो गई ।

रामाराव दगड़, पत्थर की तरह खड़े थे । उनकी दृष्टि पीपल के नीचे, गणेश जी की पुरानी मूर्ति पर पड़ी । वहाँ दीप जलाना, दगड़ परिवार का नियम था ।

"अनु अंधेरा हो रहा है, मूर्ति के सामने दीया जला दो उसे अच्छा लगेगा ।"

"जी, अच्छा!"

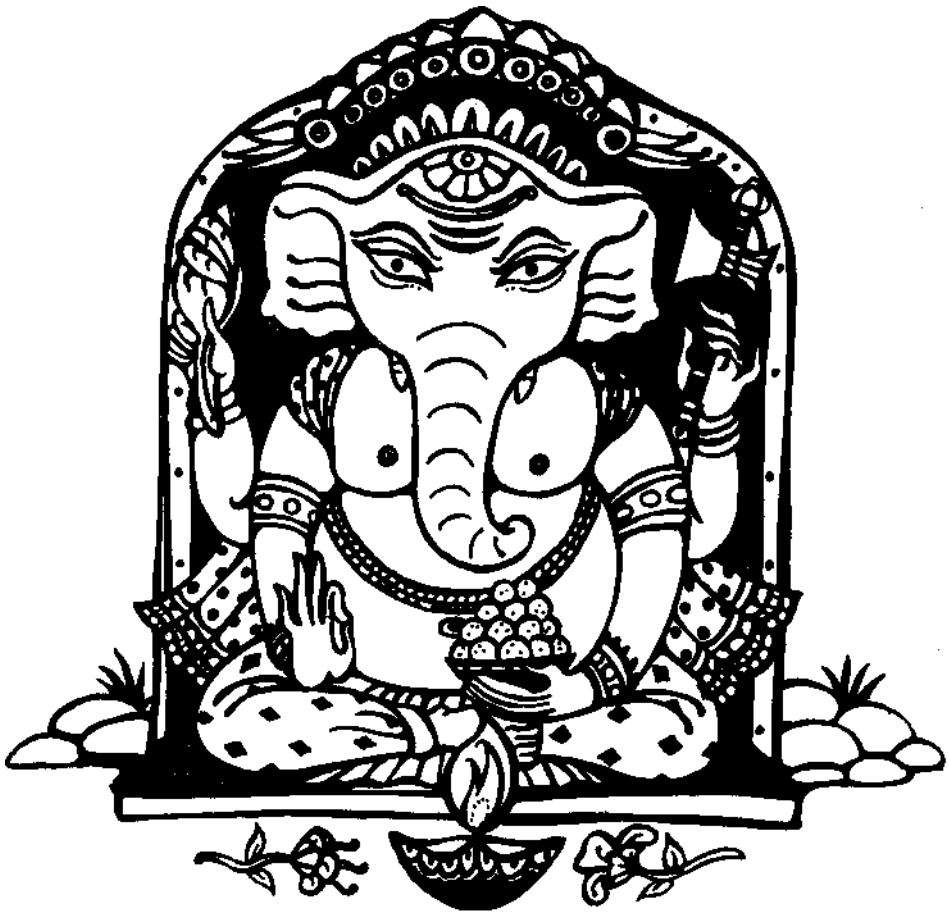

अनु ने, गणपति के सामने, दीप जलाकर रख दिया।

दीये की मन्द लौ, हवा के झोंके में लहरा रही थी। उस प्रकाश में मूर्ति, कितनी शांत दिखाई दे रही थी। मूर्ति के हाथों की उंगलियाँ, पानी और हवा की मार से घिस सी गई थीं। सूंड के ऊपर भी, खरोंच जैसे निशान थे। लम्बे कान भी टूट-फूट गये थे।न जाने कब से रामाराव, इसे देखते आ रहे थे। पर इसके भीतर स्थित शक्ति का आभास उन्हें आज से पहले, कभी नहीं हुआ था।

बस, फाटक के पास आकर रूक गई ।

पहले भैयाराम उतरा, फिर उसने सहारा देकर, नानी को उतार लिया ।

"इतनी देर कैसे हो गई भैयाराम ?" वीनू ने, दूर से ही पूछ लिया ।

"टायर पंचर हो गया था ... !" भैयाराम सामान उतारते हुये बोला ।

"नकटी की शादी में, लाखों विघ्न !" कहकर नानी खिल-खिलाकर हँस पड़ीं ।

उनके हँस पड़ने से, सारा वातावरण उज्जवल हो गया ।

चार वर्ष पहले नानी, जब अपना घर छोड़कर अमरावती आश्रम गई थीं, तो सोचा था कि शायद अब लौटकर कभी न आ सकें । जाते समय, घर की प्रत्येक वस्तु को अन्तिम स्पर्श कर गई थीं । गणेश जी को प्रणाम और हाथ से स्पर्श कर, दो पल उनके सम्मुख बैठी थीं ।

उसी घर में लौट आने पर उनका आनन्दित होना स्वाभाविक ही था । नानी के होंठ उनके मुँह पर, फैल से गये थे । पर उनके चेहरे पर खुशी झलक रही थी ।

"रँगा, ले गेंद ! " नानी ने, रँगा को पुकारा ।

पर रंगा, अनुराधा का आँचल थामें खड़ा रहा । हिला तक नहीं ।

"भूल गया है शायद ! एक बार पहचान गया तो पीछा नहीं छोड़ेगा !" कहकर अनु ने रंगा को, और पीछे सरका लिया ।

"बाद में आ जायेगा, माँ !" वीनू बोला ।

सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए नानी ने, हाथ आगे बढ़ाया ।

"सहारा दे भैयाराम ... ," वीनू चिल्ला कर बोला ।

भैयाराम का सहारा ले, नानी ऊपर चढ़ीं और चबूतरे पर रूक गईं ।

"मैं सोच रही थी, गणेश जी की दीया बत्ती कोई करता था या नहीं।"

"तुम जैसा छोड़ गईं थी सब वैसे ही चल रहा है। गणेश जी को प्रणाम कर लो!" रामाराव ने जवाब दिया।

नानी ने गणेश जी के आगे, सिर झुकाया और उनके सम्मुख बैठ गईं। उदास शाम के धुँधलके में, उन्होंने चारों ओर नज़र दौड़ाई। बच्चे, उनकी ओर दृष्टि जमाये थे जैसे कोई नई वस्तु आई हो। नानी मुस्कुरा रही थीं।

मन में आनन्द हो, तो और कुछ नज़र नहीं आता।

तभी काकू आकर, नानी से मिली । बरसों बाद मिली पडोसनें, बातों में रम गईं ।

बातों-बातों मे उसने, नानी की नाक, होंठ ध्यान से देख डाले । उन पर खरोंच के से, सफ़ेद दाग थे ।

उसी समय गौशाला में, गाय रंभा उठी ।

"पहचान लिया उसने मुझे ।" नानी हँसते हुये बोलीं ।

नानी और रामाराव, गौशाला की ओर बढ़ गये ।

नानी ने, गाय की एक थपकी ली और उसके मुँह पर प्यार से हाथ फेरने लगीं ।

नानी घर में आ गईं । हाथ मुँह धो कर, चाय पीने के लिए चबूतरे पर, आ कर बैठ गईं ।

"आप यहाँ, कोई काम नहीं करेंगी नानी ।" अनु आकर बोली ।

"क्यों ?"

"आपको केवल, आराम करना है !"

"किसने कहा ? वीनू ने ?" कहकर नानी हँस पड़ीं ।

आज उनका हँसने का दिन था ।

शाम को नानी दूध का बर्तन उठा कर, गौशाला की ओर बढ़ ही रही थीं ।

"क्या कर रही हैं आप ?!!" अनु देख कर चौंक पड़ी ।

"दूध निकालने जा रही हूँ ।"

"आप बर्तन रख दें । आपको काम नहीं करना है ।"

"अरे, आश्रम में, मैं खाना पकाती थी !"

"वहाँ डॉक्टर थे ! यहाँ कौन दौड़ धूप करता फिरेगा ?"

"कुछ नहीं होगा ।" कहकर वो चल पड़ीं ।

"आप बर्तन रख दीजिये !" अनु की आवाज़ में सख़्ती थी । नानी ने बर्तन, वहीं रख दिया । उनके कलेजे में हूक सी उठी । उनका अपमान हुआ था ।

वे उसी समय भीतर चली गईं । मुँह पर पल्ला डालकर रोती रहीं । सोते समय, उन्होंने निश्चय किया । घर मेरा है, सबको मेरे आदेश मानने होंगे । आश्रम में दस-पन्द्रह का भोजन बनाती थी । यहाँ कैसी मेहनत ?

वे मुँह अंधेरे ही उठ बैठीं । स्नान के बाद, आटे का डिब्बा लिया और आटा गूँध कर रोटियाँ सेकने लगीं ।

उठकर अनु ने चूल्हे के पास, रोटियों का ढेर देखा ।

"किसने बनाई ये रोटियाँ ?"

"मैंने ! और किसने ?"

अनु सिर पर हाथ मार कर, सुन्न खड़ी रह गई । नानी ने परवाह नहीं की और सफाई करने जुट गईं ।

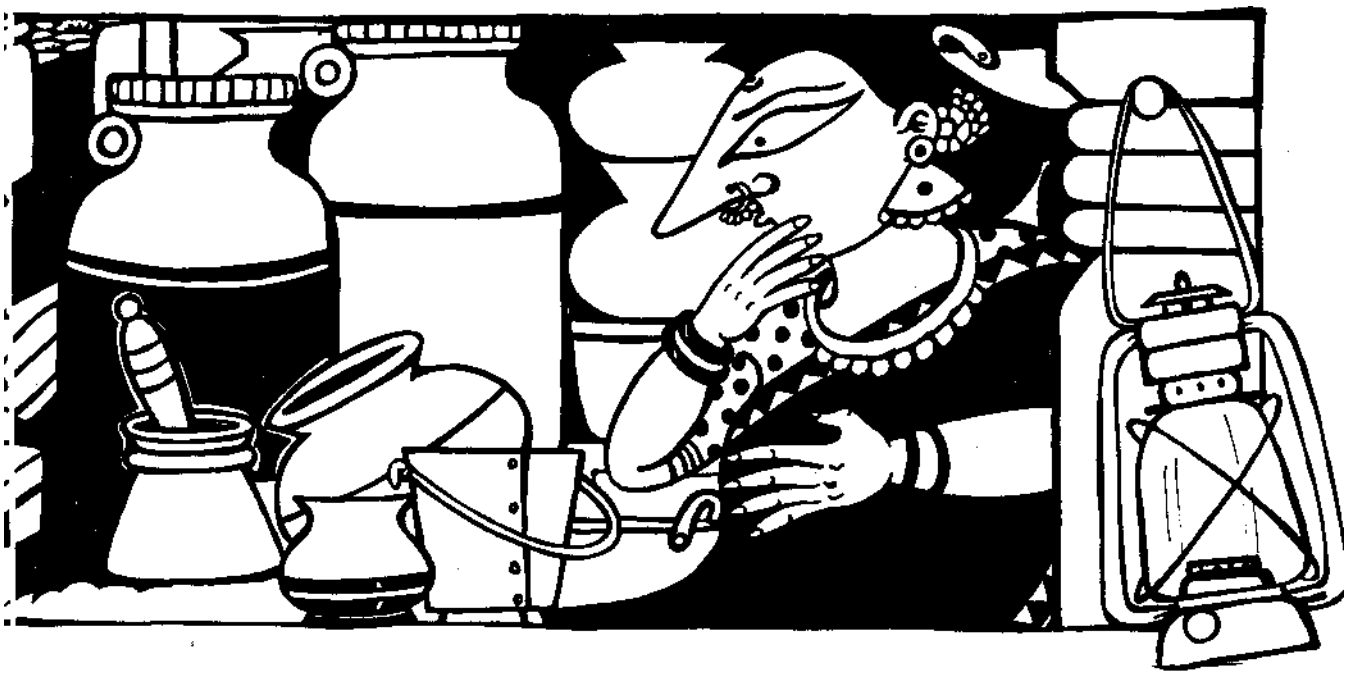

पुरुषों के भोजन कर लेने के बाद अनु और नानी खाने बैठी थीं ।

"सबने खाई थी रोटियाँ ?"

"हाँ !"

"कोई कुछ बोला ?

"हाँ, ये और ससुर जी बोले, अच्छी बनी हैं !"

यह सुनकर, नानी के चेहरे पर, रौनक आ गई ।

अनु कुछ न बोली और खाते-खाते, नानी के हाथों की उंगलियाँ देखने लगी । उनपर छोटे से नाखून थे । टेढ़ी-मेढ़ी उंगलियाँ । नानी उन्हीं हाथों से भोजन कर रही थीं ।

खाना खाने के बाद, नानी घर के भीतर जाने लगीं तो वीनू दिखाई दे गया ।

"वीनू, मेरे हाथ की रोटियाँ कैसी लगीं ?"

"अच्छी लगीं !"

नानी आनन्दित हो बरामदे में पहुँच गईं । वहाँ रामाराव चहल कदमी कर रहे थे ।

"आज की रोटियाँ कैसी लगीं ?"

"कहाँ थी, आज रोटियाँ ?"

रामाराव का ध्यान, अचानक वीनू की नज़रों की ओर गया, वे झेंप गये ।

नानी को दाल में कुछ काला नज़र आया। वे थोड़ी बुझ सी गईं। घर के भीतर चटाई बिछाकर सोने का प्रयत्न करने लगीं। पर उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

शाम को वो चुपचाप, दूध का बर्तन खोजने लगीं। माँजने वाले बर्तनों के साथ, दूध का बर्तन पड़ा था। वहीं पर रखा था, आटे का डिब्बा ! सुबह तो डिब्बा आटे से भरा था। फिर माँजने के लिए क्यों रखा है ...? वो सोचते हुये दूध का बर्तन उठा कर गौशाला की ओर बढ़ गईं।

पानी लेकर उन्होंने, गाय के थन धोये। तभी उनकी दृष्टि, गाय के आगे पड़ी रोटियों पर ठहर गई। नानी उसी समय उठ खड़ी हुईं।

बर्तन घर में ला पटका और आँगन में बंधे झूले पर बैठी, रूँधे गले को दबाये रखने का, प्रयत्न करती रहीं।

रात वो अपने कमरे में गईं। थोड़े फासले पर, दो बिछौने पड़े थे। कल भी ऐसा ही था क्या ?

उन्होंने दोनों बिछौने, सटा लिये। फिर रामाराव के बिछौने की ओर मुँह कर, एक हाथ सामने फैला, वो पड़ी रहीं।

रात आहट से, उनकी आँख खुली।

रामाराव, दीपक जला रहे थे।

फिर उन्होंने झटपट, अपना बिछौना अलग खींच लिया। चूड़ियों की खनक हुई और नानी का हाथ, फर्श पर आ गिरा। पर रामाराव ने हाथ उठा कर, उनके बिछौने पर न रखा।

इतना भी स्पर्श नहीं !

नानी के होठों से, सिसकी फूट पड़ी। पर वे रोई नहीं। बस, आँखों से पानी बहता रहा। हाथ उसी प्रकार न जाने कब तक, पड़ा रहा।

सुबह, रामाराव उठकर बाहर आये। नानी, पहले ही उठ गई थीं।

"सासूजी नहीं उठीं क्या ?"

"वो तो कब की उठ गई।"

"नहीं।"

"नहीं ? अरे वीनू ..." रामाराव चीख़ पड़े।

वीनू भागता हुआ आया। सब जगह खोज हुई। सभी कमरे देख डाले पर नानी, कहीं नहीं थीं।

पीपल के नीचे, दीप जल रहा था। गणेश जी के मस्तक पर चंदन का तिलक और सूँड पर, जसवंती के फूल थे।

"कहाँ गई होगी ?"

चारों और आदमी, दौड़ा दिये गये।

बाद में पता चला कि नानी बस अड्डे पर, अमरावती की बस में बैठी दिखाई दी थीं।